

कैवल्य और निर्वाण का पुनर्विचार: आत्मा और अनात्मा के संदर्भ में एक तुलनात्मक दार्शनिक अध्ययन

शोधार्थिनी— रश्मि

शोध पर्यवेक्षक — आशीष डोभाल

योग विज्ञान विभाग स्पर्श हिमालय विश्वविद्यालय

जीवनवाला, देहरादून (उत्तराखण्ड)

मो0— 8010510907, Email- kruronak@gmail.com

सार

भारतीय दर्शन की विभिन्न परम्पराओं में 'मुक्ति' को मानव जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य माना गया है। सांख्य-योग दर्शन में यह मुक्ति 'कैवल्य' के रूप में तथा बौद्ध दर्शन में 'निर्वाण' के रूप में प्रतिपादित होती है। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य इन दोनों अवधारणाओं का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन करना है, विशेषतः आत्मा (आत्मन/पुरुष) और अनात्मा (अनात्मन) के दार्शनिक आधारों के संदर्भ में। सांख्य-योग परम्परा पुरुष की स्वतंत्र एवं शाश्वत सत्ता को स्वीकार करते हुए कैवल्य को पुरुष और प्रकृति के पूर्ण पृथक्करण की अवस्था मानती है, जबकि बौद्ध दर्शन स्थायी आत्मा का निषेध कर निर्वाण को तृष्णा, अविद्या और दुःख के निरोध की स्थिति के रूप में स्थापित करता है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि यद्यपि दोनों परम्पराओं का लक्ष्य दुःख से मुक्ति है, तथापि उनके तात्त्विक आधार, साधना-पद्धति और मुक्ति-दृष्टि में मौलिक भिन्नताएँ विद्यमान हैं। यह शोध भारतीय दार्शनिक परम्पराओं में मुक्ति-सिद्धांतों की बहुलता एवं बौद्धिक गहनता को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द:

कैवल्य, निर्वाण, आत्मा, अनात्मा, सांख्य दर्शन, योग दर्शन, बौद्ध दर्शन, मुक्ति

[1] प्रस्तावना

भारतीय दर्शन का मूल उद्देश्य केवल सैद्धान्तिक ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि मानव जीवन के दुःख, बन्धन और अस्तित्वगत संकटों का समाधान प्रस्तुत करना रहा है। इसी कारण 'मुक्ति' या 'निःश्रेयस' को लगभग सभी भारतीय दार्शनिक परम्पराओं में परम पुरुषार्थ के रूप में स्वीकार किया गया है। यद्यपि मुक्ति का लक्ष्य समान प्रतीत होता है, तथापि उसके स्वरूप, साधन और दार्शनिक आधारों में व्यापक विविधता देखने को मिलती है।

सांख्य और योग दर्शन में मुक्ति को 'कैवल्य' कहा गया है। यहाँ पुरुष को शुद्ध चेतना एवं प्रकृति से भिन्न स्वतंत्र सत्ता माना गया है। बन्धन का कारण पुरुष का प्रकृति के साथ मिथ्या तादात्म्य है, जबकि विवेक-ज्ञान के माध्यम से इस तादात्म्य का निवारण कैवल्य की प्राप्ति कराता है। इसके विपरीत, बौद्ध दर्शन 'अनात्मवाद' का प्रतिपादन करता है। बौद्ध मत के अनुसार कोई स्थायी आत्मा या शाश्वत सत्ता अस्तित्व में नहीं है। व्यक्ति केवल पंचस्कन्धों का प्रवाह है। अतः मुक्ति का अर्थ किसी आत्मा की स्वतंत्रता नहीं, बल्कि तृष्णा, अविद्या और 'स्व' की मिथ्या धारणा का निरोध है, जिसे निर्वाण कहा जाता

है। इन दोनों दृष्टिकोणों के मध्य मूलभूत दार्शनिक भिन्नता होने पर भी दोनों का लक्ष्य दुःख से अंतिम मुक्ति है। यही तथ्य इस अध्ययन को विशेष महत्त्व प्रदान करता है।

यह शोध निम्न प्रश्नों की विवेचना करता है—

[1] कैवल्य और निर्वाण के तात्त्विक आधार क्या हैं?

[2] आत्मा और अनात्मा की अवधारणाएँ मुक्ति-दर्शन को कैसे प्रभावित करती हैं?

[3] क्या सांख्य-योग और बौद्ध दृष्टिकोणों के बीच कोई दार्शनिक संवाद संभव है?

[2] साहित्य समीक्षा (Literature Review)

भारतीय दर्शन पर अनेक विद्वानों ने व्यापक अध्ययन प्रस्तुत किए हैं। सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने भारतीय दर्शन की आध्यात्मिक प्रवृत्तियों की व्याख्या करते हुए आत्मा-केन्द्रित परम्पराओं की गहन विवेचना की है। उनके अनुसार भारतीय दर्शन में मुक्ति का विचार मूलतः आध्यात्मिक चेतना के उत्कर्ष से सम्बद्ध है।

Gerald James Larson ने सांख्य दर्शन को एक विशुद्ध दार्शनिक प्रणाली के रूप में प्रस्तुत करते हुए विवेक-ज्ञान को कैवल्य की प्राप्ति का मुख्य साधन माना है। Larson के अध्ययन में पुरुष और प्रकृति के द्वैत को सांख्य की मूल संरचना के रूप में समझाया गया है।

Erich Frauwallner ने भारतीय दर्शन के ऐतिहासिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए सांख्य और बौद्ध परम्पराओं के बीच वैचारिक समानताओं तथा भिन्नताओं को रेखांकित किया है। उन्होंने यह संकेत किया कि दोनों परम्पराएँ दुःख-निरोध को लक्ष्य करती हैं, किन्तु उनके दार्शनिक आधार भिन्न हैं।

Hajime Nakamura ने बौद्ध दर्शन के अनात्मवाद को उसकी केन्द्रीय विशेषता माना है। उनके अनुसार बौद्ध चिंतन में स्थायी आत्मा का निषेध केवल नकारात्मक प्रतिपादन नहीं, बल्कि अनुभवजन्य अस्तित्व की अनित्यता को समझने का साधन है।

यद्यपि उपर्युक्त विद्वानों ने सांख्य-योग और बौद्ध दर्शन पर महत्वपूर्ण कार्य किया है, तथापि आत्मा और अनात्मा के सापेक्ष कैवल्य और निर्वाण का प्रत्यक्ष तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित है। प्रस्तुत शोध इसी बौद्धिक रिक्ति की पूर्ति का प्रयास करता है।

[3] अनुसंधान पद्धति (Methodology)

यह शोध गुणात्मक (Qualitative) तथा तुलनात्मक (Comparative) पद्धति पर आधारित है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है।

[3.1] प्राथमिक स्रोत (Primary Sources)

[1] सांख्यकारिका

[2] पतञ्जलि योगसूत्र

[3] पाली त्रिपिटक

[4] धम्मपद

[3.2] द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources)

भारतीय दर्शन से सम्बद्ध आधुनिक विद्वानों की पुस्तकों एवं शोध-लेखों का उपयोग विश्लेषणात्मक आधार के रूप में किया गया है।

[3.3] अनुसंधान पद्धति

अध्ययन में निम्न विधियों का प्रयोग किया गया है—

पाठ-विश्लेषण (Textual Analysis)

तुलनात्मक अध्ययन (Comparative Method)

आलोचनात्मक दार्शनिक विवेचना (Critical Philosophical Interpretation)

[4] सांख्य-योग दर्शन में कैवल्य

सांख्य दर्शन भारतीय दर्शन की प्राचीनतम दार्शनिक परम्पराओं में से एक है। इसका मूल आधार द्वैतवाद है, जिसमें दो स्वतंत्र तत्त्वों कृपुरुष और प्रकृतिकृको स्वीकार किया गया है। पुरुष शुद्ध चेतना, निष्क्रिय एवं साक्षी स्वरूप है, जबकि प्रकृति जड़, परिवर्तनशील और त्रिगुणात्मक है। सांख्य के अनुसार बन्धन का कारण पुरुष का प्रकृति के साथ मिथ्या तादात्म्य है। वास्तव में पुरुष कभी बन्धन में नहीं होता, किन्तु अविवेक के कारण वह स्वयं को प्रकृति के विकारों के साथ जोड़ लेता है। यही अज्ञान दुःख का कारण बनता है। ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका में कहा गया है कि विवेक-ज्ञान के माध्यम से पुरुष अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानता है। जब पुरुष और प्रकृति का भेद पूर्णतः ज्ञात हो जाता है, तब प्रकृति पुरुष के लिए कार्य करना बंद कर देती है। यही अवस्था 'कैवल्य' कहलाती है।

पतञ्जलि योगसूत्र इस दार्शनिक आधार को साधना-पद्धति के माध्यम से विकसित करता है। योगसूत्र का प्रसिद्ध सूत्र—

योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः [Yogaś citta-vṛtti-nirodhaḥ]

चित्त की वृत्तियों के निरोध को योग का आधार मानता है। योग की अष्टांग साधनाकृयम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधिकृमन की शुद्धि तथा विवेक —ज्ञान की प्राप्ति के साधन हैं। योग दर्शन में कैवल्य केवल दार्शनिक अवधारणा नहीं, बल्कि साधना द्वारा प्राप्त अनुभूति है। यहाँ मुक्ति का अर्थ आत्मा की स्वतंत्र सत्ता की अनुभूति है।

[5] बौद्ध दर्शन में निर्वाण

बौद्ध दर्शन भारतीय चिंतन परम्परा में एक विशिष्ट मोड़ प्रस्तुत करता है। बुद्ध ने स्थायी आत्मा की अवधारणा को अस्वीकार करते हुए अनात्मवाद का प्रतिपादन किया। बौद्ध दृष्टिकोण के अनुसार व्यक्ति कोई स्थायी सत्ता नहीं, बल्कि निरन्तर परिवर्तनशील पंचस्कन्धों का समूह है—

[1] रूप

[2] वेदना

[3] संज्ञा

[4] संस्कार

[5] विज्ञान

बौद्ध दर्शन का मूल आधार चार आर्य सत्य हैं—

[1] दुःख

[2] दुःखसमुदय

[3] दुःखनिरोध

[4] दुःखनिरोधगामिनी प्रतिपदा

निर्वाण को दुःख और उसके कारणों के पूर्ण निरोध की अवस्था माना गया है। यहाँ तृष्णा (तन्हा) और अविद्या ही संसार-चक्र के मूल कारण हैं। जब तृष्णा समाप्त हो जाती है, तब पुनर्जन्म और दुःख का चक्र समाप्त हो जाता है। निर्वाण की प्राप्ति के लिए बुद्ध ने आर्य अष्टांगिक मार्ग का प्रतिपादन किया, जिसमें सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक्, सम्यक कर्मान्त, सम्यक आजीव, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि सम्मिलित हैं। बौद्ध दर्शन में मुक्ति का अर्थ किसी शाश्वत आत्मा की स्वतंत्रता नहीं, बल्कि 'मैं' और 'मेरा' की मिथ्या धारणा का विघटन है। इस प्रकार निर्वाण अस्तित्व की अनित्यता और अनात्मता के बोध से उत्पन्न मुक्ति की अवस्था है।

[6] तुलनात्मक विश्लेषण: आत्मा बनाम अनात्मा

सांख्य-योग और बौद्ध दर्शन दोनों ही दुःख से मुक्ति को जीवन का परम लक्ष्य मानते हैं, किन्तु उनकी दार्शनिक आधारभूमि में मौलिक अंतर है।

[6.1] आत्मा की अवधारणा

सांख्य-योग दर्शन आत्मा (पुरुष) को शाश्वत, स्वतंत्र और अपरिवर्तनशील सत्ता मानता है। पुरुष साक्षी चेतना है, जो प्रकृति से भिन्न है। इसके विपरीत, बौद्ध दर्शन स्थायी आत्मा का निषेध करता है। 'अनात्मवाद' के अनुसार व्यक्ति केवल क्षणिक प्रक्रियाओं का प्रवाह है।

[6.2] मुक्ति का स्वरूप

सांख्य-योग में कैवल्य आत्मा की प्रकृति से पूर्ण पृथक्ता है। यहाँ मुक्ति आत्मा की पहचान पर आधारित है। बौद्ध दर्शन में निर्वाण आत्म-धारणा के विघटन तथा तृष्णा के निरोध की अवस्था है।

[6.3] साधना-पद्धति

दोनों परम्पराएँ साधना और अनुशासन को महत्व देती हैं। योग में चित्तवृत्ति-निरोध एवं समाधि पर बल है, जबकि बौद्ध मार्ग में ध्यान, प्रज्ञा और नैतिकता प्रमुख हैं।

[6.4] समानताएँ

दोनों परम्पराओं में निम्न समानताएँ दृष्टिगोचर होती हैंकृ

[1] दुःख-निरोध को लक्ष्य मानना

[2] संसार-चक्र से मुक्ति की आकांक्षा

[3] साधना एवं आत्मानुशासन का महत्व

[4] अविद्या को बन्धन का कारण मानना

इस प्रकार, लक्ष्य की समानता के बावजूद तात्त्विक आधारों की भिन्नता दोनों परम्पराओं को विशिष्ट स्वरूप प्रदान करती है।

[7] आलोचनात्मक चर्चा (Critical Discussion)

कैवल्य और निर्वाण की तुलना भारतीय दर्शन के सबसे महत्वपूर्ण दार्शनिक प्रश्नों में से एक को सामने लाती है—क्या मुक्ति के लिए आत्मा की स्वीकृति आवश्यक है?

सांख्य-योग के अनुसार आत्मा का अस्तित्व न केवल वास्तविक है, बल्कि मुक्ति का आधार भी है। यदि पुरुष की स्वतंत्र सत्ता को स्वीकार न किया जाए, तो कैवल्य की अवधारणा अर्थहीन हो जाती है।

इसके विपरीत, बौद्ध दर्शन यह प्रतिपादित करता है कि स्थायी आत्मा की धारणा ही आसक्ति और दुःख का कारण है। अतः मुक्ति आत्मा की पहचान में नहीं, बल्कि आत्म-धारणा के विघटन में निहित है।

दार्शनिक दृष्टि से यह विरोध भारतीय चिंतन की बहुलता को दर्शाता है। एक ओर आत्मा-केन्द्रित आध्यात्मिकता है, तो दूसरी ओर अनुभव-आधारित अनात्मवाद।

समकालीन चेतना-अध्ययन (Consciousness Studies) में भी यह बहस प्रासंगिक है। आधुनिक मनोविज्ञान और तंत्रिका-विज्ञान में 'स्व' (self) की प्रकृति पर हो रहे विमर्श बौद्ध अनात्मवाद से संवाद स्थापित करते दिखाई देते हैं, जबकि चेतना की स्वतंत्र सत्ता पर आधारित सिद्धांत सांख्य-योग की ओर संकेत करते हैं।

अतः इन दोनों परम्पराओं का तुलनात्मक अध्ययन केवल ऐतिहासिक महत्त्व नहीं रखता, बल्कि समकालीन दार्शनिक विमर्शों में भी उपयोगी है।

[8] निष्कर्ष (Conclusion)

कैवल्य और निर्वाण भारतीय दर्शन की दो महत्वपूर्ण मुक्ति-अवधारणाएँ हैं। दोनों का लक्ष्य मानव को दुःख और बन्धन से मुक्त करना है, किन्तु उनके दार्शनिक आधार भिन्न हैं।

सांख्य-योग दर्शन आत्मा की स्वतंत्र एवं शाश्वत सत्ता को स्वीकार कर कैवल्य को पुरुष और प्रकृति के पृथक्करण की अवस्था मानता है। इसके विपरीत, बौद्ध दर्शन अनात्मवाद के आधार पर निर्वाण को तृष्णा और आत्म-धारणा के निरोध के रूप में व्याख्यायित करता है।

यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि भारतीय दर्शन में मुक्ति की अवधारणा एक रूप नहीं, बल्कि बहुआयामी है। यही बहुलता भारतीय दार्शनिक परम्परा की सबसे बड़ी विशेषता है।

[9] संदर्भ सूची

[1] आरण्य ह. पतञ्जलि योगदर्शन. वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन 2015.

[2] उपाध्याय ब. भारतीय दर्शन. वाराणसी: शारदा मंदिर 2014.

[3] देव न. बौद्ध धर्म-दर्शन. पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् 2008.

[4] धर्मरक्षित भि, अनुवादक. धम्मपद. बुद्धिस्ट पब्लिकेशन सोसायटी 2011.

- [5] राधाकृष्णन स. भारतीय दर्शन. भाग 1–2. नई दिल्ली: राजपाल एंड संसय 2009.
- [6] विवेकानन्द स. राजयोग एवं योगसूत्र. कोलकाता: अद्वैत आश्रमय 2016.
- [7] शर्मा रा. भारतीय दर्शन में मुक्ति का स्वरूप. मेरठ: साहित्य भंडारय 2011.
- [8] शास्त्री उ. सांख्य दर्शन. दिल्ली: विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्दय 2012.
- [9] सांकृत्यायन रा. बौद्ध दर्शन. इलाहाबाद: किताब महलय 2010.
- [10] हिरियन्ना म. भारतीय दर्शन की रूपरेखा. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदासय 2017.
- [11] Frauwallner E. *History of Indian Philosophy*. Delhi: Motilal Banarsidass; 1973.
- [12] Larson GJ. *Classical Sāṃkhya: An Interpretation of Its History and Meaning*. Delhi: Motilal Banarsidass; 1979.
- [13] Nakamura H. *Indian Buddhism: A Survey with Bibliographical Notes*. Delhi: Motilal Banarsidass; 1980.
- [14] Patañjali. *Yoga Sūtras of Patañjali*. Translated by Swami Vivekananda. Kolkata: Advaita Ashrama; 2002.
- [15] Radhakrishnan S. *Indian Philosophy*. Vols. 1–2. Oxford: Oxford University Press; 1951.
- [16] Īśvarakṛṣṇa. *Sāṃkhyakārikā*. Translated by GJ Larson. Delhi: Motilal Banarsidass; 1998.
- [17] Rahula W. *What the Buddha Taught*. New York: Grove Press; 1974.
- [18] *Dhammapada*. Translated by Acharya Buddharakkhita. Kandy: Buddhist Publication Society; 1985.